‘श्रद्धा के भंवर’ पुस्तक का लोकार्पण

भंवरलालजी डूंगरवाल श्रद्धाशील श्रावक थे : आचार्य श्री महाश्रमण

नई दिल्ली, ७ नवम्बर २०११।

दौलतपुरा के श्रद्धानिष्ठ श्रावक, कर्मठ कार्यकर्ता एवं सामाजिकता के प्रेरक श्री भंवरलालजी डूंगरवाल की स्मृति में प्रकाशित ‘श्रद्धा के भंवर’ ग्रंथ का लोकार्पण अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के करकमलों से गत दिनों केलवा के तेरापंथ समवसरण में हुआ। समारोह में मंत्री मुनि श्री सुमेरमलजी लाडनूं भी उपस्थित थे।

आचार्य श्री महाश्रमण को ग्रंथ की प्रथम प्रति श्री पुखराज डूंगरवाल, श्री रेवंत डूंगरवाल एवं श्री संजय डूंगरवाल ने समर्पित की। श्री अशोक डूंगरवाल ने मंत्री मुनि श्री सुमेरमलजी लाडनूं को ग्रंथ की प्रति भेंट की। आचार्य श्री महाश्रमणजी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ में अनेक श्रावकों ने अपनी उल्लेखनीय संघनिष्ठा एवं धार्मिकता से नये इतिहास का सृजन किया है। ऐसे श्रावकों का इतिहास सामने आना चाहिए, जिससे संपूर्ण समाज लाभान्वित हो सके और प्रेरणा पा सके। भंवरलालजी डूंगरवाल ऐसे ही एक श्रद्धाशील श्रावक थे जिनका स्मृतिग्रंथ सामने आया है। आचार्य श्री महाश्रमणजी ने प्रसंगवश स्व॰ श्री डूंगरवालजी के निकट संबंधी श्री फतेहचंदजी भंसाली के संदर्भ में कहा कि फतेहचंदजी की संघ एवं संघपति के प्रति निष्ठा अनूठी है। वे गुरुदेव श्री तुलसी के युग से ही पास में बैठकर सेवा करते रहे हैं। आचार्य महाप्रज्ञजी के समय में भी इसी तरह सेवा करते रहे और अब भी वे सेवा करते हैं। वे स्वयंसेवक एवं द्वारपाल की भांति अपनी सेवाओं से संघ को उल्लेखनीय सहयोग प्रदत्त कर रहे हैं। गुरुओं की इन पर कृपा रही है। ये रात को लगभग दो-ढ़ाई बजे सेवा में आ जाते हैं। ये इसी तरह सेवा करते रहें। उनके पुत्र चैनरूप भी तेरापंथ धर्मसंघ के समग्र विकास के लिए सदैव चिंतनशील रहते हैं।

आचार्य श्री महाश्रमणजी ने आगे कहा कि किसी भी प्रिय-अप्रिय स्थिति को जो सहने की क्षमता रखता है, सभी के प्रति समता का भाव रखता है, वह अच्छा व्यक्ति है। हर व्यक्ति को अपने जीवन में यह सूत्र आत्मसात करने की आवश्यकता है कि अपने प्रति किसी अन्य से जिस तरह के व्यवहार की अपेक्षा नहीं की जाती, वैसा व्यवहार दूसरों के साथ नहीं होना चाहिए। व्यक्ति अपने व्यवहार व आचरण से ऐसा आदर्श प्रस्तुत करे जो सबके लिए अनुकरणीय हो।

इस अवसर पर ग्रंथ की संपादिका एवं श्री भंवरलाल डूंगरवालजी की सुपुत्री श्रीमती मंजुला भंसाली ने ग्रंथ की चर्चा करते हुए कहा कि मेरे जीवन का सौभाग्य है कि मुझे पिता के रूप में स्वर्गीय श्री भंवरलालजी डूंगरवाल जैसा आदर्श महामानव मिला। असल में आज जो यह ग्रंथ छपकर सामने आया है यह उनकी ही अविस्मरणीय एवं अनुकरणीय सेवाओं का एक अमूल्य दस्तावेज है। उन जैसी सादगी, उन जैसी सरलता, उन जैसा समर्पण और उन जैसी नैतिकता को जीना दुर्लभ है। उन्होंने आगे कहा कि पिताजी जन्मजात उच्च्य संस्कारों के धनी थे। उनकी विशेषता यह थी कि वे केवल अपने परिवार के लिए ही नहीं जीए वरन् अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य का समाज एवं राष्ट्र की सेवा में भी सोत्साह सदुपयोग किया। उनका संपूर्ण जीवन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक उत्थान के लिए समर्पित रहा। व्यापार से निवृत्त होने के अनंतर उन्होंने अपना समस्त जीवन परम पूज्य आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन, आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रवर्तित प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान और अहिंसा यात्रा के माध्यम से जन-जन के जीवन निर्माण तथा नैतिक उत्थान में लगाया। श्रीमती मंजुला भंसाली ने उनके समाधिमरण की विलक्षण घटना की चर्चा करते हुए कहा कि पिताजी ने जैन आदर्शों, नैतिकता, सदाचार से अपने जीवन को मंडित किया और भावी पीढ़ी के लिए आध्यात्मिक और सामाजिक प्रेरणा का उज्ज्वल प्रकाश बिखेरकर समाधिपूर्वक मृत्यु का वरण कर एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया। इस मायने में वे सौभाग्यशाली रहे कि उन्होंने अपने जीवन को ही नहीं मृत्यु को भी महोत्सव का रूप दिया।

इस अवसर पर अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष डॉ॰ महेन्द्र कर्णावट, सक्रिय कार्यकर्ता श्री एम॰ डी॰ कांठेड़, समृद्ध सुखी परिवार मासिक पत्रिका के संपादक श्री ललित गर्ग विशेष रूप से उपस्थित थे।

प्रेषक :

(ललित गर्ग)
ए-५६/ए, प्रथम तल, लाजपत नगर-२
नई दिल्ली-११००२४
मो- ९८११०५११३३

फोटो परिचय :

(१) आचार्य श्री महाश्रमण श्री भंवरलाल डूंगरवाल की स्मृति में प्रकाशित 'श्रद्धा के भंवर' ग्रंथ का लोकार्पण करते हुए।

(२) आचार्य श्री महाश्रमण को श्री भंवरलाल डूंगरवाल की स्मृति में प्रकाशित 'श्रद्धा के भंवर' ग्रंथ की प्रति भेंट करते हुए श्री पुखराज डूंगरवाल, श्री रेवंत डूंगरवाल, श्री संजय डूंगरवाल, श्री अशोक डूंगरवाल।

(३) आचार्य श्री महाश्रमण को श्री भंवरलाल डूंगरवाल की स्मृति में प्रकाशित 'श्रद्धा के भंवर' ग्रंथ की प्रति भेंट करते हुए श्री पुखराज डूंगरवाल, श्री रेवंत डूंगरवाल, श्री संजय डूंगरवाल, श्री अशोक डूंगरवाल।

(४) आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में श्री भंवरलाल डूंगरवाल की स्मृति में प्रकाशित 'श्रद्धा के भंवर' ग्रंथ की संपादिका श्रीमती मंजुला भंसाली अपने विचार व्यक्त करते हुए।